National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(3): 01-04
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 16-11-2015
Accepted: 17-11-2015

डॉ. ममता गुप्ता
पी.डी.एफ.
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग,
रा.दु.वि.वि. जबलपुर (मध्य प्रदेश)

Correspondence:
डॉ. ममता गुप्ता
पी.डी.एफ.
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग,
रा.दु.वि.वि. जबलपुर (मध्य प्रदेश)

बालरामायण में प्रतिबिम्बित आचार्य राजशेखर के काव्यशास्त्रीय सिद्धांत

डॉ. ममता गुप्ता

शोधपत्र सार- दशम शताब्दी के यायावरीय आचार्य एवं कविराज राजशेखर काव्य और काव्यशास्त्र दोनों क्षेत्रों में समान अधिकार रखते हैं। उन्होंने काव्य के चिन्तन और प्रयोग दोनों मार्गों पर अपने स्पष्ट और स्थायी पद चिन्ह अंकित किए हैं। आचार्य राजशेखर ने बालरामायण, कर्पूरमञ्जरी, विद्धशालभञ्जिका तथा प्रचण्ड पाण्डव नामक नाट्यकृतियों तथा काव्यमीमांसा नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ (जो अपूर्ण रूप से उपलब्ध है) की रचना की है। उपलब्ध काव्यमीमांसा में काव्यशास्त्र के कुछ ही क्षेत्रों का समावेश हो पाया है। यद्यपि प्रथम अधिकरण, जिसका अभिधान कवि रहस्य है, में मुख्य रूप से कविशिक्षा से संबंधित विषयों का उल्लेख है, तथापि उसके आलोक में कविराज के रचना संचार पर दृष्टिपात करते हुए कुछ स्थल ऐसे प्राप्त होते है, जो स्पष्ट रूप से काव्यमीमांसा में निरूपित उनके मत का प्रायोगिक रूप प्रतीत होते हैं। प्रस्तुत आलेख में राजशेखरकृत महानाटक बालरामायण के सन्दर्भ में उक्त अवलोकन का प्रयास किया जा रहा हैं।

कुंजी शब्द - प्रतिभा, वाक्यार्थयोनि, शब्दार्थहरणोपाय, कविसमय, प्रतिबिम्बकल्प,. आल तुल्यदेहितुल्य, परपुरप्रवेशसदृश।

आमुख - वाल्मीकि, भट्टमेण्ठ एवं भवभूति की उदात्त परम्परा के वाहक यायावरीय महाकवि और आचार्य राजशेखर अदभुत प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व हैं। उन्होंने देवभाषा के विद्वानों के मध्य स्वयं को अपनी रचनाओं के द्वारा विलक्षण रूप में प्रस्तुत किया है।

राजशेखर उन अत्यल्प मनीषियों में से हैं, जो काव्य और काव्यशास्त्र दोनों क्षेत्रों में समान अधिकार रखते हैं। स्वयं राजशेखर ने भी काव्यमीमांसा में उद्धृत किया है-

कल्याणी ते मतिरुभयथा विस्मयं नस्तनोति।
नह्येकस्मिन्नतिशयवतां सन्निपातो गुणाना -
मेकः सूते कनकमुपलस्तत्परीक्षाक्षमोऽन्यः ।।[1]

अर्थात् भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा का एक स्थान पर संयोग दुर्लभ है, यही दुर्लभ संयोग आचार्य राजशेखर में प्राप्त होता है। उनका कवित्व जितना उत्कृष्ट और मोहक है, भावकत्व उतना ही गम्भीर और नवविचारोत्तेजक है। आचार्य राजशेखर की कारयित्री प्रतिभा के परिचायक उनके चार नाट्यवर्गीय ग्रन्थ हैं- **बालरामायण, कर्पूरमञ्जरी, विद्धशालभञ्जिका तथा प्रचण्डपाण्डव** । भावक के रूप में उनकी कीर्ति का एक मात्र आधार उनका काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **काव्यमीमांसा** है।

इन उपलब्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त हरविलास तथा भुवनकोश नामक दो अन्य ग्रन्थों को भी राजशेखर विरचित माना जाता है। **बालरामायण में- ‘ नः षट्प्रबन्धाः’** [2] का उल्लेख इस मान्यता को बल प्रदान करता है।**बालरामायण में प्रतिबिम्बित काव्यशास्त्रीय सिद्धांत -** आचार्य राजशेखर की रचनाओं के पौर्वापर्य को लेकर विद्वानों में मतभेद है। परन्तु काव्यमीमांसा को लगभग सभी विद्वान परवर्ती मानते है। सम्भवतः लक्ष्यग्रन्थों की रचना करने के पश्चात् आचार्य राजशेखर ने लक्षण ग्रन्थ का प्रणयन किया। काव्यमीमांसा नामक यह लक्षण ग्रन्थ हमें अपूर्ण रूप में प्राप्त होता है। आचार्य ने इस ग्रन्थ की जो रूप-रेखा बनाई थी यदि वह उसी रूप में कार्यन्वित हो गई होती तो काव्यमीमांसा काव्यशास्त्र के सम्पूर्ण और सर्वाधिक विशालकोष के रूप में प्रतिष्ठित होता। प्रथम अधिकरण के प्रथम अध्याय से ज्ञात होता है आचार्य राजशेखर ने काव्यविद्या के अठ्ठारह अधिकरण माने है। इन अधिकरणों पर विभिन्न आचार्यों द्वारा पृथक-पृथक ग्रन्थों की रचना की। इन सभी प्रकीण विषयों का एक स्थान पर समावेश करने के उद्देश्य से आचार्य राजशेखर ने अठ्ठारह अधिकरण वाले काव्यमीमांसा नामक ग्रन्थ की रचना की जिसके एकमात्र उपलब्ध प्रथम अधिकरण को भी शास्त्र संग्रह आदि अठ्ठारह अध्यायों में विभक्त किया गया है

ततस्ते पृथकपृथकस्वशास्त्राणि विरचयाञ्चक्रुः। इत्थड्.कारश्च प्रकीर्णत्वात् सा किञ्चिदुच्छिद्दे। इतीयं प्रयोगकाड्.गवती संक्षिप्य सर्वमर्थमल्पग्रन्थेन अष्टादशप्रकरण प्रणीता। तस्यां अयं प्रकरणधिकरणसमुद्देशः। शास्त्रसंग्रहः, शास्त्रनिर्देशः, काव्यपुरुषोत्पत्ति, शिष्यप्रतिभे, व्युत्पत्तिविपाकाः, पदवाक्यविवेकः, वाक्यविधयः, काकुप्रकाराः, पाठप्रतिष्ठा, काव्यार्थयोनयः, अर्थानुशासनं, कविचर्या, राजचर्या, शब्दार्थहरणोपायाः, कविविशेषः, कविसमयः, देशकालविभागः, भुवनकोशः इति कवि रहस्यं प्रथमधिकरणत्यादि।[3]

काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण में शास्त्र-निर्देश तथा काव्यपुरुषोत्पत्ति का वर्णन करने के पश्चात् सर्व प्रथम जिस काव्यशास्त्रीय विषय को विवेचित किया गया है, वह है **काव्यहेतु। शिष्यप्रतिभे** नामक अध्याय में इस विषय में विचार विमर्श किया गया है। काव्यहेतु के संबंध में आचार्य का मत है कि शक्ति की काव्य का हेतु है- **सा केवलं काव्ये हेतु इति यायावरीयः**[4] शक्ति द्वारा ही प्रतिभा और व्युत्पत्ति उत्पन्न होती है।[5] प्रतिभा श्रेष्ठ है अथवा व्युत्पत्ति इस संबंध विभिन्न आचार्यों के मतों को उपन्यस्त करने के पश्चात् आचार्य स्वयं का मत प्रस्तुत करते है-

प्रतिभाव्युत्पत्ती मिथः सवेते श्रेयस्यौ इति यायावरीयः।[6]

जिस प्रकार लावण्य के बिना रूप तथा रूप के बिना लावण्य वास्तविक सौन्दर्य को नहीं प्राप्त करते उसी प्रकार कवित्व के लिए प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति दोनों ही आवश्यक हैं। इन दोनों से युक्त कवि ही वस्तुतः कवि कहलाने का अधिकारी है-

प्रतिभाव्युत्पत्तिमांश्च कविः कविरित्युच्यते।[7]

उनके इस सिद्धांत पर प्रतिपादन बालरामायण में सर्वत्र देखा जा सकता है। सम्पूर्ण नाटक प्रतिभा और व्युत्पत्ति के मणिकाञ्चन संयोग से ओतप्रोत है। प्रतिभा की परिभाषा करते हुए आचार्य का कथन है

या शब्दग्राम्यमर्थसार्थमलड्.कारतन्त्रमुक्तिमार्गमन्यदपि तथा विधमधिहृदयं प्रतिभासयति सा प्रतिभा।[8]

प्रतिभा अदृष्ट पदार्थों को प्रत्यक्ष कर देती है। राजशेखर की नवोन्मषशालिनी प्रतिभा का सड्.केत नाटक के आरम्भ में ही मिल जाता है, जब परिवार्धिक द्वारा यह पुँछे जाने पर कि वाल्मीकि ने स्वयं देख कर जिस रामचरित को निबद्ध किया था उससे विशिष्ट यह कवि क्या वर्णित करेगा? राजशेखर कहते है-

रसनासु च सुकवीनां निवसन्ति सारस्वतं चक्षुः।[9]

उनके अनुसार सज्जनों का प्रज्ञोन्मेष असीम होता है। नाटक में प्रस्तुत नवीन अवधारणाएँ उनके प्रज्ञोन्मेष के असीमत्व की पुष्टि करती है। राजशेखर की व्युत्पत्ति के संबंध में तो कोई सन्देह किया ही नहीं जा सकता उनका बहुज्ञता सर्वविदित है। बालरामायण में सर्वज्ञ, विशेष रूप से सीतास्वयंवर के अंतर्गत किया गया विभिन्न राजाओं का सूक्ष्म वर्णन[10], प्रमदवन का षड्ऋतु वर्णन[11] तथा अन्तिम अड्.क के पुष्पक विमानयात्रा प्रसड्.ग[12] में द्विव्यादिव्य स्थलों का मनोहर दिक्दर्शन उनकी बहुज्ञता का परिचायक है। पुष्पक विमानयात्रा प्रसड्.ग अत्यन्त सरस है, यहाँ पर्वत, नदियाँ आदि पदार्थ सरसता को प्राप्त कर लेते है। यथा कोवरी नदी के वर्णन में

" कावेरी कबरीव भामिनी भुवो देव्याः पुरो दृश्यतां
पूगैर्नागलताश्रितैरूपदिशत्याश्लेषविद्यामिव।[13]

इस प्रकार के वर्णन उनके इस मत के समर्थक है जिसके अनुसार

काव्ये तु कविवचनानि रसयन्ति विरसयन्ति च नार्थाः।[14]

इसके अतिरिक्त आचार्य राजशेखर ने वाक्यार्थयोनि, शब्दार्थहरणोपाय, कविसमय, देशकालविभागादि से संबंधित जिस सिद्धांतों का प्रतिपादन काव्यमीमांसा में किया है, उसका प्रयोगात्मक रूप बालरामायण में स्पष्टरूप से दृष्टिगत होता है। यथा आचार्य ने श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराणदि जिन षोडश वाक्यार्थयोनियों का उल्लेख किया है उनका बालरामायण में प्रचुर किया गया है। उदाहरणार्थ इस पद्य में जहाँ विश्वामित्र के वर्णन में पुराण का आश्रय लिया गया है-

न्यस्यान्यान् दक्षिणास्यां दिशि गगनमुनीन् सप्त क्लृप्तक्रषपक्षो
नव्यं हव्यं च कृत्वा त्रिदशजनहृते सर्वयागाड्.गवर्गे।
वासिष्ठीं शापमुद्रां सपदि विदलयन महासत्रबन्धे
मध्येव्योम त्रिशड्.कोः शतमखविमुखः स्वर्गसर्ग चकार।[15]

इसी प्रकार शब्दहरण के संबंध में यदि विचार किया जाये तो आचार्य द्वारा स्वीकृत सिद्धांत का उदाहरण बालरामायण में देखा जा सकता है। आचार्य पर प्रयुक्त शब्द का उसी रूप में हरण को दोष मानते हैं कुछ आचार्यों की मान्यता है कि एक से तीन पदों तक हरण किया जा सकता है परंतु आचार्य को यह मान्य नहीं है। उनके अनुसार- **उल्लेखवान्पदसन्दर्भः परिहरणीयो नाप्रत्यभिज्ञातः पादोऽपि। तस्यापि साम्ये न किञ्चन दुष्टं स्यात्।** अर्थात् अतिप्रसिद्ध पदों को ग्रहण किया जा सकता है। उनसे साम्य होने पर भी दोष नहीं होता। यथा-

इत्युक्तवानुक्तिविशेषरम्यं मनः समाधाय जयोपपतौ।
उदारचेता गिरमित्युदारां द्वैयायनेनाभिदधे नरेन्द्रः ।।

इसका हरण प्रकृत पद्य में किया गया है-

इत्युक्तवानुक्तिविशेषरम्यं राजानुजन्मा विरराम मानी।
संक्षिप्तमाप्तावसरं च वाक्यं सेवाविधिज्ञैः पुरतः प्रभूणाम्।।[16]

आचार्य राजशेखर के दिए गये इस उदाहरण के समान ही बालरामायण के इस पद्य में भी शब्दाहरण माना जा सकता है-

योगीन्द्रश्छन्दसां स्रष्टा रामायण महाकविः।
वल्मीकिजन्मा जयति प्राच्यः प्राचेतसो मुनिः ।।[17]

यहाँ पर प्राचेतसो मुनिः पद का ग्रहण आचार्य राजशेखर के पूर्वज आचार्य भवभूति के महावीरचरित के प्रकृत पद्य से किया गया प्रतीत होता है-

प्राचेतसोमुनिवृषा प्रथमः कवीनां
यत्पावनं रघुपतेः प्रणिनाय वृत्तय्।।[18]

अर्थहरण के उपायों को विवेचित करते हुए आचार्य राजशेखर ने उनके मुख्य चार भेद किये है- **1. प्रतिबिम्बकल्प, 2. आलेख्यप्रख्य, 3.**

तुल्यदेहितुल्य तथा 4. परपुरप्रवेशसदृश।[19] इनमें से प्रतिबिम्बकल्प को अकवित्वदायी, आलेख्यप्रख्य को अनुग्राह्य, तुल्यदेहितुल्य को सुधीजनप्रयोज्य तथा परपुरप्रवेशसदृश को सुकविग्राह्य माना है। अर्थ के प्रकार बताते हुए कवि ने अन्ययोनि, निहृतयोनि के है। अयोनि अर्थ की चर्चा की है, उपर्युक्त भेद क्रमशः अन्ययोनि और निहृतयोनि के है। अयोनि अर्थ कवियों के द्वारा स्वयं उद्भावित होता है। आचार्य ने इस प्रकार के अर्थ का निबन्धन ही श्रेष्ठ माना है-

चिंतासमं यस्य रसैकसूतिरूदेति चित्राकृतिरर्थसार्थः।
अदृष्टपूर्वो निपुणैः पुराणैः कवः स चिन्तमणिरद्वितीयः।।[20]

अयोनिज अर्थ तीन प्रकार है- लौकिक, अलौकिक तथा मिश्र। बालरामायण में अधिकांशतः कविराज राजशेखर ने इसी प्रकार के अर्थों का निबन्धन किया है। यथा-

एकदिग्म्येणपि अलं स्नेहेन शिखिदलच्छविना।
स्तुमः समद्विपाश्व प्रेक्ष्यं च पिच्छोपमं प्रेम।[21]

इस प्रकार के अनोनिज अर्थों के साथ सुकविजनप्रयोज्य अन्य प्रकार के अर्थों का भी ग्रहण है यथा परपुरप्रवेश सदृश अर्थ जिसमें मूलैक्य होने पर भी प्रबंध में पर्याप्त भिन्नता होती है। इसके उदाहरण में इन दो पद्यों को प्रस्तुत किया जा सकता है जिनमें भावसाम्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। पुष्पकविमान यात्रा के प्रसङ्ग में आए इस दोनों पद्यों में प्रथम् रघुवंश से है, तथा दूसरा बालरामायण से-

करेण वातायनलम्बितेन स्पृष्टस्त्वया चण्डि कुतूहलिन्या।
आमुञ्चतीवाभरणं द्वितीयमुद्विन्नविद्युद्वलयो घनस्ते।।[22]

कुतूहलवशात् सीता के द्वारा विमान के वातायन से वलयभूषित हाथ बाहर करने पर मेघ मानों विद्युत रूप द्वितीय कङ्कण समर्पित कर रहा है। इसी प्रकार बाल रामायण में हारों द्वारा सुसज्जित हाथ सीता द्वारा कुतूहल वश विमानवातायन से बाहर करने पर मानो प्रतिक्रिया के रूप में मेघ धारापात कर रहा है-

हस्ते त्वया हारिणि हारयष्टिभिर्विमानवातायनतः कुतूहलात्।
कृते विदध्यात्सदृशीं प्रतिक्रियामितीव धाराम्बु घनो निरस्यति।।[23]

अशास्त्रीयमलौकिकं च परम्परायातं यमर्थमुपनिबध्नन्ति कवयः स कविसमयः।[24]

अशास्त्रीय तथा आलौकिक अर्थों का उपबनिबन्धन कवि समय है। कुछ आचार्यों ने इसे अनुचित माना है परन्तु राजशेखर के मत में यह कविमार्गानुग्राही है।[25] आचार्य ने मुख्य रूप से इसके तीन प्रकार बताएं है, स्वग्र्य, भौम तथा पातालीय। इनमें भौम व्यापक विषय वाला होने के कारण प्रधान है। निबंधन की दृष्टि से प्रत्येक के तीन भेद है असत् का निबन्धन, सत् का अनिबन्धन् तथा नियम। आचार्य राजशेखर ने कवि समयों के विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन किया है। यथा- असत् निबद्ध भौम के अन्तर्गत नदियों में कमल, कुमुद आदि का वर्णन, पर्वत मात्रा में सुवर्ण रत्नादि का वर्णन, सत अनिबद्ध भौम में वसन्त में मालती का तथा चन्दन में फल पुष्प का न होना आदि और नियम में कोकिल का केवल वसन्त ऋतु में बोलना आदि। इसी प्रकार स्वग्र्य कविसमय में चन्द्र के कलङ्क में शश अथवा हरिण का ऐक्य, कामदेव की पताका में मकर तथा मीन का ऐक्य, चन्द्र का समुद्र अथवा अजिनेत्र से उत्पन्न होना, कामदेव का सशशीरी होना आदि। पातालीय कवि समय के अन्तर्गत सर्प, नागों की एकता, दैत्य-असुरों की एकता आदि वर्णन प्राप्त होता है।[26] बालरामायण में इन कवि समयों का प्रचुर प्रयोग प्राप्त होता है जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

चकोर्य एवं चतुराश्चन्द्रिकाचामकर्मणि।[27]

यहाँ पर चकोरी द्वारा चन्द्रिका पान का वर्णन किया गया है।

श्यामधवलप्रवालस्वच्छसुरचापकान्तिच्छायामपि छादयन्तो दीयत्तां सुन्दरकटाक्ष विक्षेपाः।[28]

यहाँ पर कटाक्षों के वर्ण का वर्णन हैं।

अत्रै लोंचनशुक्तिमौक्तिकमणेर्देवात्सुधादीधिते[29]

इत्यादि में चन्द्र की उत्पत्ति का आत्रि नेत्र से, **हरनेत्राग्निदधस्य केतौ मकरलक्षणः**[30] इत्यादि में काम के मकरध्वज होने का नर्मदा वर्णन में कमलपत्र का आदि वर्णन[31] प्राप्त होता है।

काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण के अंतिम भाग में देशकालविभाग का वर्णन है, आचार्य राजशेखर का मत है कि देशकाल का विभाग करने वाला कवि अर्थदर्शन की दिशा में दरिद्रता को नहीं प्राप्त होता है।[32] राजशेखर का देशकाल संबंधी ज्ञान सुविदित है। बालरामायण में सर्वत्र यह ज्ञान व्यञ्जित होता है। सीता स्वयंवर में विभिन्न राजाओं का वर्णन, विमान यात्रा के मार्ग में आए स्थलों का वर्णन, प्रमदवन का वर्णन उनके प्रौढ़ देशकालज्ञान के प्रखर उदाहरण है।

इस प्रकार हमें काव्यमीमांसा में वर्णित अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन बालरामायण में प्राप्त हो जाता है। यद्यपि काव्यमीमांसा बालरामायण के बाद भी रचना मानी जाती है, तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि कवि के मानस में काव्य के संबंध में जो स्पष्ट अवधारणाएँ थीं उनके अनुरूप ही कवि ने अपनी कृतियों का प्रणयन किया होगा। लक्ष्य ग्रन्थों की रचना के पश्चात् आचार्य अपनी मान्यताओं को मूर्त रूप देने तथा समस्त काव्यशास्त्री विषयों को एक स्थान पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रौढ़ावस्था में काव्यमीमांसा की रचना की। लक्ष्यग्रन्थों में भी उनकी काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं के संकेत मिलते है, जिसका पल्लवन लक्षण ग्रन्थ में प्राप्त होता है यथा बालरामायण का मङ्गलाचरण जिसमें काव्य कवि रचना, शब्द, अर्थ आदि[33] के भेदों का स्पष्ट सङ्केत मिलता है-

प्रसत्तेर्यः पात्र तिलकयति यं सूक्तिरचना,
य आद्यः स्वादूनां श्रुतिचलुकलेह्येन मधुना।
यदात्मानो विद्याः परिणमति यश्चार्थवपुषा,
स गुम्फो वणीनां कविवृषनिषेव्यो विजयते।[34]

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है, कि आचार्य राजशेखर ने काव्यमीमांसा में जिन काव्यशास्त्रीय मान्यताओं का प्रणयन किया है, उनमें से कुछ उनके व्यक्तित्व में तथा कुछ उनके व्यक्तित्व में तथा कुछ कृतित्व में प्रतिबिम्बित होती है।

सन्दर्भाः

1. काव्यमीमांसा *4/11*
2. बालरामायण *1/12*
3. काव्यमीमांसा *1* अध्याय
4. वही *4* पृष्ठ *25*
5. वही *4* पृष्ठ *25*
6. वही *5* पृष्ठ *36*
7. वही *5* पृष्ठ *36*
8. वही *4* पृष्ठ *25*
9. बालरामायण *1/7*
10. वही तृतीय अंक
11. वही पंचम अंक
12. वही दशम अंक
13. वही *10/72*
14. काव्यमीमांसा *9* पृ. *101*
15. बालरामायण *1/26*
16. काव्यमीमांसा *11* पृ. *124, 125*
17. बालरामायण *1/9*
18. महावीर चरित *1/7*
19. काव्यमीमांसा *12* पृ. *134*
20. वही *12/17*
21. बाल रामायण *5/15*
22. रघुवंश *13/21*
23. बालरामायण *10/26*
24. काव्यमीमांसा *12* पृ. *166*
25. काव्यमीमांसा *12* पृ. *166*
26. वीर *14* एवं *15* अध्याय
27. बालरामायण *10/82*
28. वही *3* पृ. *78*
29. वही *3/34*
30. वही *10/71*
31. वही *10/76*
32. काव्यमीमांसा *17* पृ. *190*
33. काव्यमीमांसा *5* पृ. *37*
34. बालरामायण *1/1*